• प्रवचन...

श्रद्धाका मूल्य

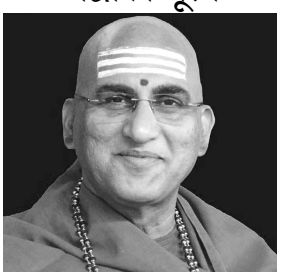

स्वामी अवधेशानंद गिरि

महर्षि पतंजलि कहते हैं–कुछ चीजें ऐसी हैं जिन्हें जीवन में संभालकर रखना चाहिए। एक साधक यत्नपूर्वक स्वयं के प्रति गंभीर होकर, स्वयं के प्रति सचेत होकर, अपने में जागरूकता पैदा करके देखें कि क्या यह सब चीजें मेरे पास सुरक्षित हैं? क्या यह सब मैंने संभालकर रखी हैं? इस जगत में आप सही ढंग से नहीं रह पाएंगे, अगर ये चीजें आपने संभालकर अपने पास नहीं रखीं–श्रद्धा वीर्य स्मृति और समाधिपूर्वक जीवन।

महर्षि पतंजलि द्वारा बताए गए उपरोक्त सूत्र में मूलतः श्रद्धा ही है। श्रद्धा का वास्तविक अर्थ है– महापुरुषों के वाक्यों में निष्ठा होना। उनके आप्त वचन आपको हितकर लगें। आपको यह लगे कि जो शास्त्र में है, ग्रंथ में है, संत कह रहा है, गुरु कह रहे हैं, माता पिता बता रहे हैं और हमें परंपरा से प्राप्त है, वे सारे के सारे ऐसे प्रमाण हैं जिनसे तारण हो सकता है। यही तत्व तारक हैं, धर्ममूलक हैं, व्यवस्था मूलक हैं, ज्ञानमूलक हैं तथा मुक्तिमूलक हैं। जब हमें भ्रम घेरेगा, दुविधा में भटक जाने का भय पैदा होगा, अज्ञान में लुप्त होना निश्चित सा लगने लगेगा, संदेह और संशय कुलबुलाएंगे। तथा बुद्धि को व्यथित करेंगे तब हमें महर्षि पतंजलि का यह सूत्र सही राह दिखाएगा, सांत्वना एवं धैर्य बंधाएगा तथा हमारी रक्षा करेगा।

सत्संग के इस वातावरण के मूल में भी मात्र श्रद्धा है। कहीं के परिवेश में बौद्धिकता होती है और कहीं के परिवेश में पाण्डित्य होता है। कहीं का परिवेश अत्यंत ऊर्जा से भरा होता है। वहां प्रबंधन, व्यवस्था, सज्जा और बहुत सी औपचारिकताएं हावी होती हैं। लेकिन यहां का परिवेश पूर्णतया आस्थापूर्ण है और इस परिवेश के मूल में है–श्रद्धा। श्रीमद्भागवत गीता में कहा गया है श्रद्धा ज्ञान की जननी है। श्रद्धा की कोख में ही ज्ञान पलता है। जो ज्ञान भ्रम–भय का भंजन करता है, हमारी मूल मान्यताओं पर प्रहार करता है, हमारे पूर्वाग्रहों से ग्रसित हमारी बुद्धि में समाधान का कारक बनता है तथा हमें उद्धत, चंचल और उन्मत्त होने से रोकता है; वह अत्यंत आनंदकारक एवं शांतिप्रदायक है।

• ज्ञान चर्चा...

संबोधि...

सजग, सतर्क और सचेत नहीं, जागृत रहो... सपने तुम्हें सच लगें या नींद तुम्हें सुला दे तो तुम फिर कैसे कायम करोगे स्वयं का अस्तित्व। नशा तुम्हें हिला दे तो फिर तुम्हारी कोई ताकत नहीं। विचार तुम्हें कट्टर बना दे या भावनाएं तुम्हें भावुक कर दें तो तुम फिर तुम नहीं। ऐसे ही जब मृत्यु आएगी तो तुम्हें मार ही देगी। इसीलिए जरूरी है संबोधि पथ पर

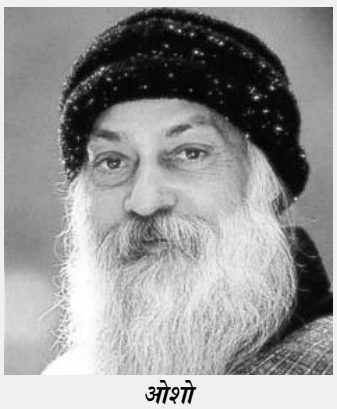

ओशो

चलना। इसे ही कहते हैं...ऑन द वे ऑफ लाइट। संबोधि शब्द बौद्ध धर्म का है। इसे बुद्धत्व भी कहा जा सकता है। देखा जाए तो यह मोक्ष या मुक्ति की शुरुआत है। फाइनल बाइएटिट्यूड या सेल्वेशन तो शरीर छूटने के बाद ही मिलता है। हालांकि भारत में ऐसे भी कई योगी हुए हैं जिन्होंने सब कुछ शरीर में रहकर ही पा लिया है। फिर भी होशपूर्ण सिर्फ शुद्ध प्रकाश रह जाना बहुत बड़ी घटना है। होशपूर्वक जीने से ही प्रकाश बढ़ता है और फिर हम प्रकाश रहकर सब कुछ जान और समझ सकते हैं।

ओशो कहते हैं हमारा जीवन एक दुर्घटना मात्र है। कब पैदा हुए, कब बड़े हुए और कब मर गए, इसका पता ही नहीं चलता। इस यांत्रिक और संताप से ग्रस्त यात्रा में हम जिन्हें महत्व देते हैं वे हमारे तथाकथित दो कौड़ी के विचार, भावनाएं और एक दूसरे को धोखा देने और खाने की प्रवृत्ति तथा अंधी दौड़। स्वयं को महान समझना अच्छी बात है, लेकिन मुगालते पालना अच्छी बात नहीं।

हम यांत्रिक ढंग से जीते हैं। सोए–सोए जीते हैं, मूर्च्छा में जीते हैं। विचार भी हमारी बेहोशी का एक हिस्सा है। आंखें झपकती हैं, पता ही नहीं चलता। अंगूठा क्यों हिलाते हैं, इसका भी भान नहीं रहना। इसीलिए तो हमारे जीवन में इतना विषाद और संताप है। इस संताप और विषाद को मिटाने के हम जो उपाय करते हैं वे हमें अधिक विषाद में ले जाते हैं, क्योंकि वे आत्मविस्मृति के उपाय हैं।

कोई शराब पीने लगता है, कोई धन–संपत्ति की तरफ दौड़ने लगता है, कोई राजनीति की पागल दौड़ में संलग्न हो जाता है, कोई किसी और पद के नशे में उन्मत्त होने लगता है। लेकिन कोई भी असली उपाय नहीं कर सकता कि जिससे यह विषाद मिटे और जीवन में आनंद और शक्ति का प्रादुर्भाव हो। महावीर, कृष्ण और बुद्ध की वाणी का सार यह है कि चलो तो होशपूर्वक, बैठो तो होशपूर्वक, उठो तो होशपूर्वक, भोजन करो तो होशपूर्वक। जो भी तुम कर रहे हो जीवन की छोटी से छोटी क्रिया, उसको भी होशपूर्वक किए चले जाओ। क्रिया में बाधा न पड़ेगी, क्रिया में कुशलता बढ़ेगी और होश भी विकसित होता जाएगा।।

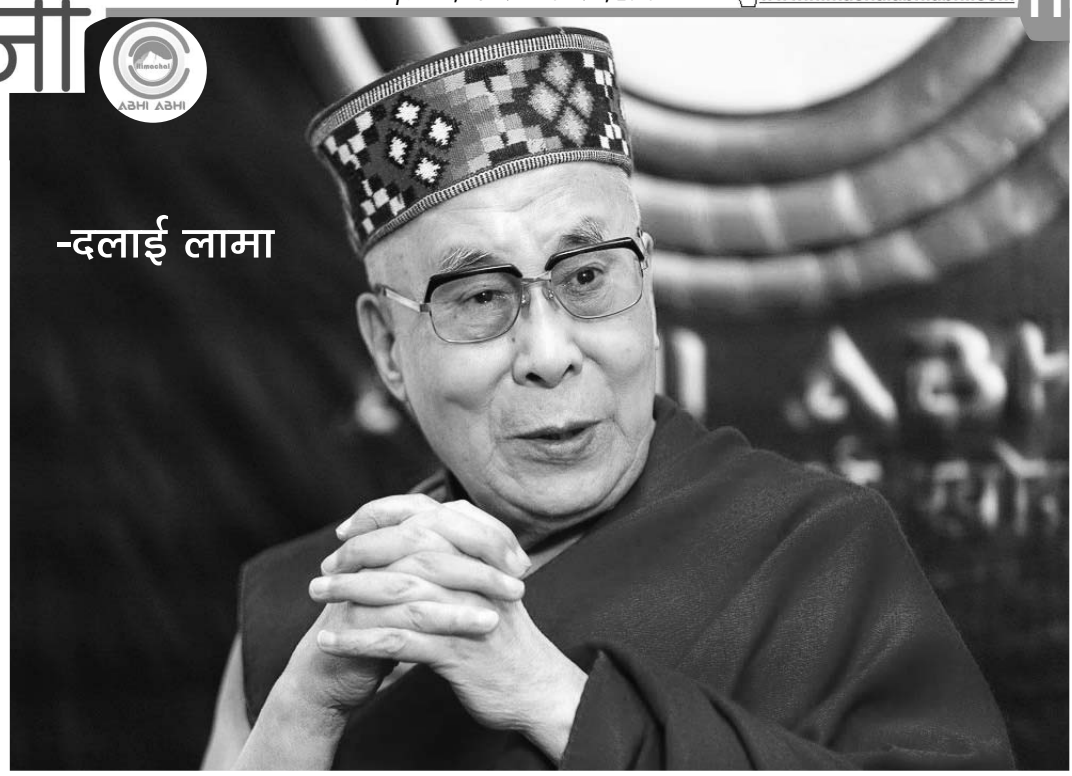

हेतु यान और फल यान...

हेतु यान और फल यान के बीच अंतर है- हेतु यान, महायान यान है जिसमें स्व पर कोई ध्यान नहीं होता जिस में किसी प्रभाव के साथ एक समान पहलू है - प्रशिक्षण मार्ग की अवधि के दौरान। महायान जिसमें प्रशिक्षण के मार्ग के दौरान चार पूर्ण शुद्धताओं के साथ एक समान पहलू है जिसे फल यान अथवा मंत्रयान कहा जाता है।

यह आचार्य जे चोंखापा ने लम-रिम छेन में कहा थाः यान के संबंध में, क्योंकि यह उसका यान है, यानि उस फल को बताता है, जो यहां वांछित है और जिस कारण से यह इच्छा होती है, यह यान कहलाता है। फल है निवास, काय, संपत्ति और क्रियाकलाप, बुद्ध का प्रासाद, काय, सम्पदा और कार्य की चार पूर्ण परिशुद्धता।

वर्तमान में व्यक्ति एक दैविक प्रासाद, एक दिव्य दल, दैवीय आनुष्ठानिक वस्तुएं और ब्रह्मांड तथा उसके निवासी जैसे बुद्ध, पर ध्यान करता है। इस तरह यह फल यान है क्योंकि एक फल के यान के अनुसार व्यक्ति ध्यान के माध्यम से विकास करता है।

इस प्रकार, महायान एक समग्र रूप से परमितायान और मंत्रयान में वर्गीकृत है क्योंकि इन दोनों के बुद्ध के रूप काय को प्राप्त करने के लिए आधारभूत रूप से विभिन्न साधन हैं, जो दूसरों के लक्ष्य को पूरा करते हैं। साधारणतया हीनयान और महायान शून्यता की अपनी प्रज्ञा के अंतर के अनुसार अलग नहीं किए जाते, पर उपरिलिखित के अनुसार, उनके उपायों में अंतर के कारण उन्हें विभाजित किया जाता है। विशेष रूप से, यद्यपि महायान को पारमितायान और मंत्रयान में विभाजित किया गया है, यह उनके शून्यता की समझ की उनकी प्रज्ञा में अंतर के कारण नहीं है; दोनों महायान व्यवस्था को उनके उपायों के दृष्टिकोण में अंतर के कारण अलग करना चाहिए।

महायान में उपाय का मुख्य पक्ष वह भाग है जो रूप काय की प्राप्ति से संबंधित है, और मंत्रयान में रूप काय को प्राप्त करने वाली विधि मात्र देव योग है जिसमें स्वयं में रूप काय की तरह पक्ष होने पर ध्यान करना है। यह उपाय पारमितायन में नियोजित विधि से श्रेष्ठ है।

मंत्रयान के शिष्यों के संबंध में, चार प्रकार हैं- अवर, मध्य, श्रेष्ठ और परम उत्कृष्ट। तंत्र के चार वर्गों की शिक्षा इन चार प्रकार के शिष्यों को ध्यान में रखते हुए दी जाती थी। चूंकि शिष्य मंत्र के चार वर्गों के माध्यम से मंत्रयान में प्रवेश करते हैं, इसलिए चार वर्गों की तुलना चार द्वारों से की जाती है। यदि आप इस सोच में पड़ जाएं कि ये चार क्या हैं, तो वे क्रिया तंत्र, चर्या तंत्र, योग तंत्र और अनुत्तर योग तंत्र हैं। कालचक्र, जिसका वर्णन नीचे दिया जाएगा, अनुत्तर योग तंत्र के वर्ग का है।

वर्तमान में व्यक्ति एक दैविक प्रासाद, एक दिव्य दल, दैवीय आनुष्ठानिक वस्तुएं और ब्रह्मांड तथा उसके निवासी जैसे बुद्ध, पर ध्यान करता है। इस तरह यह फल यान है क्योंकि एक फल के यान के अनुसार व्यक्ति ध्यान के माध्यम से विकास करता है।

इस प्रकार, महायान एक समग्र रूप से परमितायान और मंत्रयान में वर्गीकृत है क्योंकि इन दोनों के बुद्ध के रूप काय को प्राप्त करने के लिए आधारभूत रूप से विभिन्न साधन हैं...

• ????...

आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति...

अक्रम विज्ञान के अनोखे मार्ग में ज्ञानविधि दो घंटे की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें ज्ञानीपुरुष 48 मिनट तक भेद ज्ञान के वाक्य बुलवाते हैं और ज्ञान लेनेवालों को उन सभी वाक्यों को दोहराना होता हैं। इसे 'भेद विज्ञान' कहते है। इस प्रक्रिया में आत्मा और अनात्मा के बीच भेद रेखा पड़ जाती है। उसके बाद जीवन के रोजमर्रा के उदहारण दे कर पांच आज्ञाएं (पांच प्रमुख सिद्धांत) समझाई जाती हैं। ये पांच आज्ञाएं आत्मानुभव की रक्षा करती हैं और आपको समभाव और शांतिपूर्वक जीवन जीने में मदद करती हैं। ज्ञानविधि के लिए प्रत्यक्ष आना पड़ता है। क्या प्रज्वलित मोमबत्ती के चित्र का उपयोग करके मोमबत्ती को प्रज्वलित किया जा सकता है? नहीं! आपको एक प्रज्वलित मोमबत्ती का उपयोग करना पड़ेगा। उसी तरह, स्वयं के स्वरूप को पहचानने के लिए प्रत्यक्ष ज्ञानीपुरुष की जरूरत पड़ती है। ज्ञानविधि एक प्रयोगात्मक प्रक्रिया है जिसमें अठारह (18) साल या उससे अधिक उम्र के लोग हिस्सा ले सकते हैं। यह प्रक्रिया एक अमूल्य उपहार है। जो सभी को निःशुल्क दिया जाता है। यहां पर आपके वर्तमान धर्म या गुरु को बदलने की जरूरत नहीं है। ज्ञानीपुरुष की शिक्षाएं सभी धर्म, लिंग और किसी भी सामाजिक स्तर वालों के लिए उपयोगी हैं।

• विंचेस्ट हाउस...

अमेरिका के कैलिफोर्निया में स्थित विंचेस्ट हाउस का निर्माण 1884 में हुआ था। यह महल 38 साल में बनकर तैयार हुआ था। विंचेस्ट हाउस को भूत बंगले के तौर पर जाना जाता है। 160 कमरों वाला महलनुमा यह घर पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करता है। जो लोग भूत–प्रेत में विश्वास करते है और जो नहीं भी करते दोनों तरह के लोग यहां पर मौज–मस्ती के लिए आते है। एक जमाने में यह सारा विंचेस्टर का घर था। लोगों का मानना है कि विंचेस्ट हाउस में सारा की आत्मा भटकती रहती है।